चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

अप्रैल-जून, 2024

न्यूज़लेटर

हकृवि व चेक यूनिवर्सिटी प्राग ने शिक्षा व अनुसंधान में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर किए हस्ताक्षर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और चेक यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग के बीच अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध को अगले पांच साल के लिए बढ़ाया गया। इस अनुबंध के अनुसार दोनों संस्थान शिक्षा व कृषि विश्वविद्यालय के प्रमुख अनुसंधानों में सहयोग को और अधिक सुदृढ़ करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि चेक यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग की ओर से प्रो. थॉमस सुब्रत अधिष्ठाता, फैकल्टी ऑफ इकोनोमिक्स एंड मैनेजमेंट ने इस समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर चेक यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग के डॉ. यान हुको, डॉ. शेल्वी कोबजेव, इंजीनियर सुकुमार तथा विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी व वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को होगा फायदा : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस प्रकार के समझौता ज्ञापनों के तहत हम आपसी हित के क्षेत्रों की पहचान और सुदृढ़ कर रहे हैं। इस अनुबंध के पश्चात मिलकर अनुसंधान कार्य करने के अतिरिक्त दोनों विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के आदान-प्रदान, वैज्ञानिक संगोष्ठियों व शैक्षणिक बैठकों में भाग लेने, शैक्षणिक सूचनाओं के लेन-देन आदि को बढ़ाया जाएगा। इस एमओयू से हकृवि के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियो को यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग की अनुसंधान व प्रौद्योगिकी को जानने व शिक्षा ग्रहण करने को बढ़ावा मिलेगा। इस अनुबंध के तहत दोनो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपनी शोध को नई तकनीकों के साथ दोनों संस्थानों में निपुणता के साथ पूरा करने में एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिससे शोध की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा विद्यार्थियों को उच्च शैक्षणिक संस्थानों में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

इंटरेक्शन मीट का आयोजन : विश्वविद्यालय की इंटरनेशनल अफेयर सेल ने चेक यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज के विदेशी प्रतिनिधियों के साथ एक इंटरेक्शन मीट का आयोजन किया जिसमें यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग के वैज्ञानिक डॉ. थॉमस सुब्रत, डॉ. यान हुको, डॉ. शेल्वी कोबजेव तथा इंजीनियर सुकुमार ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों, वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों के साथ शोध और शैक्षणिक विषयों के बारे में चर्चा की। डॉ. थॉमस ने यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग के विभिन्न पाठ्यक्रमों तथा शोध तकनीकियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने भारतीय छात्रों को दी जाने वाली यूरोपीय संघ के इरास्मस मुंडस फेलोशिप के बारे में बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को कार्यक्रम के माध्यम से छात्रवृत्ति एवं शैक्षणिक सहयोग की दिशा में प्रोत्साहित किया। उन्होंने इन फेलोशिप द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता जैसे यात्रा भत्ते, अनुसंधान अनुदान, और ट्यूशन छूट पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय के छात्र शैक्षणिक गुणवत्ता के क्षेत्र में प्राग विश्वविद्यालय में अपने अध्ययन को पूरा कर सकते हैं। ज्ञात रहे कि इस अनुबंध के अंतर्गत गत वर्षो में विश्वविद्यालय के 61 विद्यार्थी चेक यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज, प्राग में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

अंतर्वस्तु

हकृवि लगातार अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से कृषि तकनीक को कर रहा सुदृढ़ : प्रो. बी.आर. काम्बोज	2
हकृवि के चारा अनुभाग ने जई की नई उन्नत किस्म एचएफओ 906 की विकसित	2
कांगो गणराज्य के प्रतिनिधि मंडल ने किया हकृवि का दौरा	3
प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन	4
हकृवि को मिला मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली नामक डिजाइन अधिकार	4
फैकल्टी प्रोफाइल-2024 का कुलपति ने किया विमोचन	5
पृथ्वी को प्रदुषण रहित रखना हम सभी का कर्तव्य: प्रो. बी.आर. काम्बोज	5
हकृवि में अनुसूचित जाति के किसानों को तकनीकी ज्ञान देने हेतु डिजिटल लैब होगी स्थापित	6
हकृवि को हस्तशिल्प कुर्सी डिजाइन करने पर मिला पेटेंट कार्यालय से प्रमाण-पत्र	6
हकृवि ने विश्व रेडक्रॉस दिवस पर रक्तदान शिविर का किया आयोजन	7
भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका: प्रो. बी.आर. काम्बोज	7
विश्व एग्री-टूरिज्म दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित	8
हकृवि को 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र	9
गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा: कुलपति	10
धान फसल में बौनेपन की समस्या से निपटने के लिए किसान उठाएं कारगर कदम: प्रो. बी.आर. काम्बोज	10
'बायोमेथनेशन एवं अपशिष्ट मूल्यांकन लैब' कृषि अवशेषों के मूल्यवर्धक उत्पाद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका...	11
एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित धान थ्रेशर (मशीन) को मिला पेटेंट	12

संरक्षक

प्रो. बी.आर. काम्बोज
कुलपति

संपादक

डॉ. संदीप आर्य
मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक

अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2024-14-2

हकृवि लगातार अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से कृषि तकनीक को कर रहा सुदृढ़ : प्रो. बी.आर. काम्बोज

वैस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि मंडल ने किया हकृवि के विभिन्न स्थलों का दौरा :
आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न स्थलों का दौरा किया। इन स्थलों में ग्राफ्टिंग यूनिट, दीन दयाल उपाध्याय जैविक उत्कृष्टता फार्म, टिशू कल्चर लैब, रोबोटिक लैब तथा हाइड्रोपोनिक तकनीक का दौरा कर हकृवि के वैज्ञानिकों से अनुसंधान एवं तकनीक के बारे में जानकारी प्राप्त की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं आस्ट्रेलिया की वैस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि मंडल की विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में विभिन्न महत्वाकांक्षी विषयों को लेकर एक बैठक आयोजित हुई। आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि मंडल में हॉक्सबरी इंस्टीट्यूट फॉर द एनवायरनमेंट, प्लांट फिजियोलॉजी के प्रोफेसर डेविड टिश्यू, प्लांट साइंस के प्रो. औला घन्नौम, सॉयल इकोलॉजिस्ट डॉ. उफेनीगार्ड नील्सन, वरिष्ठ अनुसंधान कार्यक्रम अधिकारी, वेस्टर्न सिडनी इंटरनेशनल नेविटास एजुकेशन सर्विसेज प्रा. लिमिटेड नई दिल्ली से डॉ. कोपल चौबे शामिल रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि संयुक्त प्रतिनिधि मंडल द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों के आदान-प्रदान, टिकाऊ खेती, आपदा-जोखिम प्रबंधन, वैश्विक चुनौतियों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने जैसे विभिन्न विषयों पर विस्तार से बातचीत की गई। प्रतिनिधि मंडल ने संरक्षित खेती हेतु नवीन समाधानों, कृषि क्षेत्र को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक आपदाओं, अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों के अतिरिक्त पर्यावरण से संबंधित खतरों की भविष्यवाणी तथा आपसी बातचीत के माध्यम से इन खतरों को रोकने के लिए संयुक्त कार्य योजना तैयार करने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि हकृवि लगातार अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से कृषि तकनीक को सुदृढ़ कर रहा है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि प्रतिनिधि मंडल के साथ अनुसंधान, एकेडमिक, संयुक्त एमआरईएस, डयूल डिग्री प्रोग्राम की प्रगति, प्रत्यक्ष पीएचडी डयूल डिग्री कार्यक्रम और दोनों तरफ से डब्ल्यूएसयू और हकृवि के बीच अनुसंधान, शैक्षणिक गतिविधियों पर सहयोग को लेकर और अधिक गति प्रदान करने पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति की अध्यक्षता में प्रतिनिधि मंडल ने वैज्ञानिकों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के साथ संरक्षित खेती एवं जल के उपयोग से संबंधित नवीन तकनीकों के बारे में भी चर्चा की। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण में आ रही गिरावट से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए कारगर कदम उठाने पर भी जोर दिया गया।

हकृवि के चारा अनुभाग ने जई की नई उन्नत किस्म एचएएफओ 906 की विकसित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की नई उन्नत किस्म एचएएफओ 906 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इस किस्म से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस किस्म में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया कि देश में 11.24 प्रतिशत हरे व 23.4 प्रतिशत सुखे चारे की कमी है जिसके कारण पशुओं की उत्पादकता प्रभावित हो रही है। चारे की अधिक गुणवत्तापूर्ण व ज्यादा पैदावार देने वाली किस्में विकसित होने से पशुपालकों को लाभ होगा व पशुओं की उत्पादकता भी बढ़ेगी। साथ ही एचएएफओ 906 किस्म राष्ट्रीय स्तर की चौक किस्म कैंट एवं ओएस 6 से भी 14 प्रतिशत तक अधिक हरे चारे की पैदावार देती है। जई की एचएफओ 906 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 906 किस्म को देश के उत्तर-पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उतराखंड) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुमोदित की गई हैं।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि

द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है।

यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आहवान किया।

उत्तर-पश्चिमी राज्यों के लिए विकसित जई की नई किस्म की विशेषताएं : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने जई की नई किस्म की विशेषता का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 906 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 655.1 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 124.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 27.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि क्रूड प्रोटीन की पैदावार 11.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के चारे में प्रोटीन की मात्रा 10 प्रतिशत है जिसके कारण इसके चारे की गुणवत्ता पशुओं के लिए अधिक लाभदायक है।

एचएफओ 906 किस्म को विकसित करने में इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान: इस किस्म को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. डी.एस. फोगाट, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. रवीश पंचटा, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. सतपाल एवं डॉ. नीरज खरोड़ का योगदान रहा है।

कांगो गणराज्य के प्रतिनिधि मंडल ने किया हकृवि का दौरा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार की उन्नत कृषि तकनीकों, शोध कार्यों व नवाचारों का कांगो गणराज्य के किसानों को भी लाभ मिलेगा। इसी कड़ी में कांगो गणराज्य के राजदूत वाबेंगा कालेबो थियो के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज से मुलाकात की। इस बैठक में हकृवि के अधिकारियों सहित हरियाणा के प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों को विश्वविद्यालय द्वारा कृषि क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों एवं उन्नत किस्म के बीजों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। प्रतिनिधि मंडल को बासमती चावल एवं मक्का की खेती में खासतौर पर सहयोग देने पर चर्चा हुई। बैठक में सदस्यों ने कृषि क्षेत्र में निवेश करने के लिए विशेष रूप से केन्द्रीय कृषि अनुसंधान और कृषि व्यवसाय से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों को स्थापित करने में रूचि दिखाई। उन्होंने कहा कि चावल उत्पादन के लिए संसाधनों का पता लगाने और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा के लिए हरियाणा के प्रगतिशील किसानों एवं कांगो के बीच सहयोग बढ़ाने हेतु विस्तार से बातचीत की गई।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि कृषि क्षेत्र से संबंधित नवीनतम तकनीकों को अपनाकर कांगो में आर्थिक विकास को गति प्रदान की जा सकती है। हरियाणा के प्रगतिशील किसानों ने बैठक में सिंचाई की नवीनतम विधियों, जलवायु परिवर्तन, कृषि उपकरण, कृषि पद्धतियों और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि करने हेतु स्थायी और लाभदायक पद्धति विकसित करने के लिए आपसी तालमेल बढ़ाने पर जोर दिया। बैठक में बीज उत्पादन, कृषि आत्मनिर्भरता, मक्का उत्पादन, जैविक उत्पादों की बढ़ती वैश्विक मांग के अतिरिक्त भोजन की बर्बादी को कम करने, कृषि उपज में मूल्य जोडने, भंडारण की बेहतर व्यवस्था करने और फसल कटाई के बाद प्रसंस्करण सुविधाओं में निवेश करने पर जोर दिया।

कांगो गणराज्य के राजदूत वाबेंगा कालेबो थियो ने बताया कि प्रतिनिधि मंडलों के मध्य हुई बैठक से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं किसानों से जुड़े विभिन्न महत्वाकांक्षी कार्यो को गति मिलेगी। विश्वविद्यालय की उन्नत तकनीकों व नवाचारों से कांगो गणराज्य की कृषि संबंधित तकनीकों व उपकरणों में काफी सुधार आएगा।

कांगो प्रतिनिधि मंडल ने हकृवि के विभिन्न स्थलों का किया दौरा : प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न स्थलों का दौरा किया। इन स्थलों में डॉ. मंगल सेन संग्रहालय, दीन दयाल उपाध्याय जैविक उत्कृष्टता फार्म, टिशू कल्चर लैब तथा एबिक का दौरा कर हकृवि के वैज्ञानिकों से अनुसंधान एवं तकनीक के बारे में जानकारी प्राप्त की।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी. आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक- किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने कहा कि प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुडकर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती कर रहे किसान व्हाट्सएप ग्रुप बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुरन्त एक दूसरे को लाभ पंहुच सके, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो।

उन्होंने बताया कि भावी पीढियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरूआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें।

हकृवि में स्थापित पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने विभिन्न विषयों पर चल रहे प्रयोगों के बारे में जानकारियां साझा की। साथ ही किसानों के सवालों के जवाब भी दिए। प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों एवं सब्जियों पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के उचित परिणामों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हो। संगोष्ठी में किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।

हकृवि को मिला मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली नामक डिजाइन अधिकार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली नामक डिजाइन किए गए उत्पाद पर दस साल का डिजाइन अधिकार मिला है। भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से जारी डिजाइन प्रमाण पत्र में इस उत्पाद को 371981-001 पंजीकरण संख्या प्रदान की गई। मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली का डिजाइन विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में शोधार्थी खुशबू ने किया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई व शुभकामनाएं दी।

इसलिए डिजाइन की गई मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली: पशुपालन में महिलाओं को चारा डालने में सबसे ज्यादा समस्या होती है। इसलिए ऐसे कार्य को करने के लिए उपयुक्त साधन की जरूरत होती है। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए मोटाइल कैटल फीडिंग ट्राली (पशु चारा ट्राली) बनाई गई है। यह ट्रॉली आयरन शीट और रबड़ से बनी हुई है। इसमें एक पहिया, एक बेरो, पीछे दो स्टैंड और दो हैंडल है ताकि उपयोगकर्ता पर लोड के वजन को कम किया जा सके। ट्रॉली का इस्तेमाल हम चारा डालने के साथ-साथ पशुओं को पानी पिलाने के लिए कर सकते हैं। मोटाइल कैटल फीडिंग ट्रॉली ऐसा साधन है जिसमें चारा आसानी से उठाया जा सकता है और आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। इस ट्रॉली में चारा व पानी आसानी से जहां पशु बंधे होते है, वहां ले जाया जा सकता है। जिससे महिलाओं की कार्यक्षमता बढ़ेगी तथा उनके समय एवं उर्जा की बचत होगी। इससे मांसपेशियों एवं हड्डियों पर कम दबाव पड़ेगा।

फैकल्टी प्रोफाइल-2024 का कुलपति ने किया विमोचन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन के सभा कक्ष में विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा प्रकाशित फैकल्टी प्रोफाइल-2024 का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। इस फैकल्टी प्रोफाइल में कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, छात्र कल्याण निदेशालय व नेहरू लाइब्रेरी से संबंधित विश्वविद्यालय में कार्यरत फैकल्टी बारे जानकारियां उपलब्ध करवाई गई हैं।

इस फैकल्टी प्रोफाइल के संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज हैं जबकि मुख्य संपादक मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, संपादक संयुक्त निदेशक डॉ. अपर्णा व सहायक निदेशक डॉ. जितेन्द्र कुमार है। इसमें सभी कालेजों की फैकल्टी प्रोफाइल दी गई है जिसमें कृषि महाविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्र, कृषि मौसम विज्ञान, सस्य विज्ञान, पशु विज्ञान, व्यवसाय प्रबंधन, कीट विज्ञान, कृषि विस्तार शिक्षा, वानिकी विभाग, अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग, बागवानी विभाग, सूत्रकृमि विभाग, पादप रोग विज्ञान, बीज विज्ञान प्रौद्योगिकी, मृदा विज्ञान, सब्जी विज्ञान विभाग शामिल है। कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के विभागों में बेसिक इंजीनियरिंग, फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग, प्रसंस्करण और खाद्य इंजीनियरिंग, नवीकरणीय और जैव-ऊर्जा इंजीनियरिंग व मृदा एवं जल अभियांत्रिकी शामिल है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में जीव रसायन, वनस्पति विज्ञान एवं पादप क्रिया विज्ञान, रसायन विज्ञान, भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति, गणित एवं सांख्यिकी, कीटाणु विज्ञान, आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग, भौतिक विज्ञान, समाजशास्त्र, प्राणिशास्त्र और जल कृषि, कंप्यूटर सैक्शन, खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र शामिल है। सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में परिधान एवं वस्त्र विज्ञान, विस्तार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन, खाद्य पदार्थ और पोषण, मानव विकास और परिवार अध्ययन तथा संसाधन प्रबंधन और उपभोक्ता विज्ञान शामिल हैं।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में जलकृषि विभाग, जलीय पर्यावरण प्रबंधन विभाग, जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग, मछली अभियांत्रिकी विभाग, मत्स्य पालन विस्तार अर्थशास्त्र और सांख्यिकी विभाग, मछली प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी विभाग व मत्स्य संसाधन प्रबंधन विभाग शामिल हैं। ज्ञात रहे कि इससे पहले फैकल्टी प्रोफाइल 2021 में बनी थी।

पृथ्वी को प्रदुषण रहित रखना हम सभी का कर्तव्यः प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भू-दृश्य संरचना इकाई द्वारा संपदा कार्यालय के सामने विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यक्रम में पौधारोपण करके विश्व पृथ्वी दिवस पर सभी को पौधारोपण करने के लिए प्रेरित किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जाता है, पहली बार 22 अप्रैल, 1970 को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया था। इस वर्ष पृथ्वी दिवस का थीम 'प्लेनेट बनाम प्लास्टिक' है। जिसका मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण से प्रकृति को होने वाले नुकसान के बारे में सचेत करना है। एक अनुमान के मुताबिक 90 प्रतिशत प्लास्टिक रिसाइकिल नहीं हो पाता है जो पर्यावरण के लिए घातक है।

प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है जिसकी वजह से स्थिति दयनीय होती जा रही है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी को प्रदुषण रहित रखना हम सभी का कर्तव्य है। ऐसे में हमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना पड़ेगा और इसे बेहतर बनाने में योगदान देना होगा। उन्होंने कहा कि लगातार वृक्षों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग व प्लास्टिक के प्रयोग से हमारी धरती का स्वरूप एवं पर्यावरण दूषित होता जा रहा है। ऐसे में इसे बचाए रखने के लिए समाज को अहम कदम उठाते हुए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे पर्यावरण प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए पौधारोपण करना बहुत जरूरी है। पृथ्वी को स्वस्थ व पहले की तरह बनाने के लिए हम सभी का कर्तव्य है कि अपनी धरती को हरा-भरा और बेहतर बनाने का संकल्प लेना पड़ेगा ताकि संसार के सभी पेड़-पौधों पशु-पक्षियों एवं जंतुओं की जैव विविधता का संरक्षण किया जा सके। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के भू-दृश्य संरचना इकाई के अध्यक्ष डॉ. पवन कुमार ने बताया कि पौधारोपण कार्यक्रम के तहत जकरंदा के 200 पौधे रोपित किए गए।

हकृवि में अनुसूचित जाति के किसानों को तकनीकी ज्ञान देने हेतु डिजिटल लैब होगी स्थापित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति के किसानों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान तथा उनकी क्षमता निर्माण को मजबूती प्रदान करने के लिए एक डिजिटल लैब की स्थापना की जाएगी। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत 60 लाख रुपए की अनुदान राशि प्रदान की गई है। इस लैब में किसानों को कृषि क्षेत्र से संबंधित नवीनतम तकनीकी जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा। डिजिटल लैब में मौसम संबंधी, अनुदान संबंधी, फसलों में होने वाले नुकसान की जानकारी तथा फसलों में कीट आदि की जानकारी किसानों को दी जाएगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों, विकसित किये जा रहे उन्नत किस्म के बीजों, कृषि संबंधी प्रशिक्षण इत्यादि से प्रदेश के किसानों को लाभ प्राप्त हो रहा है। यह उसी कड़ी में एक कदम है।

डिजिटल लैब परियोजना की प्रमुख अन्वेषक डॉ. रश्मि त्यागी ने बताया कि अनुसूचित जाति के किसानों को कृषि पोर्टल से जुड़ी तमाम जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। इस लैब के माध्यम से किसानों के समक्ष आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का निराकरण करने में मदद मिलेगी। परियोजना में सह प्रमुख अन्वेषक डॉ. जतेश काठपालिया, डॉ. विनोद कुमारी, डॉ. जितेन्द्र भाटिया व डॉ. अतुल ढींगड़ा शामिल हैं।

हकृवि को हस्तशिल्प कुर्सी डिजाइन करने पर मिला पेटेंट कार्यालय से प्रमाण-पत्र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा हस्तशिल्प कुर्सी का डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इस डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या 386667-001 है। कुर्सी का डिजाइन विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू जाखड़ ने किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रही उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों की कड़ी मेहनत का नतीजा है। उन्होंने कहा कि हस्तशिल्प डिजाइन विकसित करने से इस क्षेत्र में विद्यार्थियों को और आगे बढने के अवसर प्राप्त होंगे।

विश्वविद्यालय ने बौद्धिक संपदा अधिकारों में हासिल की उल्लेखनीय उपलब्धियां : प्रो. काम्बोज ने बताया कि हकृवि ने विगत वर्षों में 119 तकनीकों के बौद्धिक संपदा अधिकारों की प्राप्ति हेतु भारतीय पेटेंट की डिजाइन व ट्रेडमार्क तथा कॉपीराइट आफिस में आवेदन किए। जिनमें से अभी तक 54 तकनीकों के लिए अधिकार प्रदान हुए है। पिछले 3 वर्षों में उल्लेखीय उपलब्धि प्राप्त करते हुए विश्वविद्यालय में 6 पेटेंट, 11 कॉपीराइट व 11 डिजाइन सहित कुल 28 बौद्धिक संपदा अधिकार प्राप्त हुए। विश्व बौद्धिक संपदा अधिकार दिवस के अवसर पर उन्होंने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार किसी भी राष्ट्र व संस्थान की शोध गुणवत्ता, शैक्षिक स्तर का स्तंभ है।

विश्वविद्यालय की वैश्विक रैंकिंग तथा शोधार्थियों के रोजगार क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान है। किसी तकनीक को बौद्धिक संपदा अधिकार मिलने में उसकी व्यवसायिक संभावनाएं व विश्वसनियता में भी बढ़ोतरी होती है। इसलिए वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों में बौद्धिक संपदा बढ़ाने हेतु प्रयास जारी है।

डा. मंजु महता एवं शोधार्थियों ने बताया कि इस कुर्सी में दो पैनल बनाए गए हैं, जो बाएं और दाएं दोनों तरफ हैं। दाएं पैनल का उपयोग ड्राइंग या पेंटिंग करते समय उपकरणों को रखने के लिए किया जा सकता है और बाएं पैनल का उपयोग ड्राइंग शीट को रखने के लिए किया जा सकता है। दोनों पैनल फोल्डेबल हैं जो की स्थान प्रबंधन के सिद्धांत का पालन करते हैं और अतिरिक्त जगह नहीं घेरते हैं। पीठ समर्थन और कुशनिंग सीट व्यक्ति को पीठ दर्द और रीढ़ की हड्डी की चोट से बचाती है। लंबे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। यह कार्य स्टेशन उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मस्कुलो स्केलेटल विकारों से बचाता है।

हकृवि ने विश्व रेडक्रॉस दिवस पर रक्तदान शिविर का किया आयोजन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में विश्व रेडक्रॉस दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। छात्र कल्याण निदेशालय, जिला रेड क्रॉस सोसायटी, सिविल अस्पताल, यूथ रेड क्रॉस, एनएसएस व एनसीसी के सहयोग से आयोजित किए गए इस शिविर में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि रेडक्रॉस का मुख्य उद्देश्य मूल रूप से किसी भी समय और परिस्थितियों में सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों को प्रेरित, प्रोत्साहित एवं आरंभ करना है। रेडक्रॉस सोसायटी मानवता, निष्पक्षता, तटस्थता, स्वतंत्रता, स्वैच्छिक सेवा, एकता और सार्वभौमिकता जैसे 7 मौलिक सिद्धांतों पर काम करता है। विश्व में इस तरह की संस्था की शुरुआत अट्ठाहरवी शताब्दी में हुई परन्तु हमारे देश में तो हजारों साल पहले से ही परमार्थ की परंपरा रही है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण महर्षि दधिची हुए हैं। उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिए ना केवल अपना देह त्याग किया था बल्कि इस देह का इस्तेमाल करने की अनुमति भी उन्हें दी थी। उन्होंने कहा कि हम यदि इतिहास की बात करें तो भाई कन्हैया का उदहारण हमारे अंदर करूणा और सेवा का भाव भर देता है। युद्ध के दौरान वो न केवल सिख सैनिकों को बल्कि घायल मुगल सैनिकों को भी पानी पिलाते और उनकी सेवा बड़ी श्रद्धापूर्वक करते थे। इस बात से सिख योद्धा चिढ़ गए और गुरू जी से उनकी शिकायत की। तब गुरू के पुछने पर कन्हैया ने कहा, 'हां गुरू जी' वे सच कह रहे हैं, किन्तु युद्ध के मैदान में मुझे कोई मुगल या सिख सैनिक दिखाई नहीं देते, मुझे तो वहां केवल मनुष्य ही दिखाई देतें हैं। कुलपति ने कहा कि रक्त का कोई विकल्प नहीं है। इसलिए युवाओं को रक्तदान शिविरों में रक्तदान करने के लिए बढ़-चढकर भाग लेना चाहिए। थैलेसिमिया से पीड़ित बच्चों, गर्भवती महिलाओं, सडक दुघटर्नाओं एवं विभिन्न प्रकार की बीमारियों से प्रभावित व्यक्तियों को प्रतिदिन रक्त की आवश्यकता होती है। इसकी पूर्ति केवल रक्तदान से ही संभव है। रक्तदान करके हम किसी भी व्यक्ति को नया जीवन प्रदान कर सकते हैं। शिविर में रक्तदान करने वालों का मुख्यातिथि ने हालचाल जाना तथा बैच लगाकर उनका उत्साहवर्धन भी किया। शिविर में कुल 130 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

मुख्य वक्ता जिला रेडक्रॉस सोसायटी के पूर्व सचिव सुरेन्द्र श्योराण ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस आंदोलन की स्थापना 1864 के जिनेवा कन्वेंशन द्वारा की गई थी। 1901 में, हेनरी डुनेंट को शांति के लिए पहला नोबेल पुरस्कार दिया गया। रेडक्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति को 1917, 1944 और 1963 में तीन नोबेल शांति पुरस्कार मिले हैं । यह दुनिया में एकमात्र संस्था है जिसने तीन नोबेल शांति पुरस्कार जीते हैं। जीन हेनरी डुनेंट के जन्म दिवस पर प्रत्येक वर्ष 8 मई को विश्व रेडक्रॉस दिवस के रूप में मनाया जाता है।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. एमएल खिच्चड़ ने विश्व रेडक्रॉस दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि रक्तदान को महादान कहा गया है। रक्तदान को लेकर विश्वविद्यालय स्तरीय पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कृषि महाविद्यालय के के छात्र रितीक ने प्रथम, दृष्टि ने द्वितीय व मत्स्य महाविद्यालय की छात्रा दिव्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिकाः प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) था। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर द्वारा आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट

अतिथि के रूप में यूएएस थारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे।

मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। इस मिशन के तहत 'मेक इन इंडिया' के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। वर्तमान समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं। इन नीतियों को अपनाकर, किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं, मिट्टी के कटाव को कम कर सकते हैं और रसायनों के प्रयोग को कम कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है। उन्होंने बताया कि नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी फसलों के उत्पादन को बढ़ा रहा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है।

कार्यशाला के चीफ पेटर्न व हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका रहेगी, कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षो में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। उन्होंने बताया कि आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश को उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी और स्थानीय उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना होगा और उत्पादों को निर्यात को बढ़ाने के बारे में भी सोचना होगा। कृषि क्षेत्र में युवाओं और हितधारकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि कृषि-शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे अच्छे रोडमैप में से एक हो सकती है क्योंकि यह कृषि-आधारित स्टार्टअप के लिए आधार तैयार करती है।

उन्होंने बताया कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए और युवाओं की कृषि क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने के लिए जीपीएस, सेंसर, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय भी किसानों के हित के लिए शोध कार्यों, नवीनतम तकनीकों, शैक्षणिक गतिविधियों व विस्तार कार्यों जैसी गतिविधियों से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

विश्व एग्री-टूरिज्म दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

जिस प्रकार शरीर को पोषण के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़-पौधों की आवश्यकता होती है। पेड़-पौधे पर्यावरण की अशुद्धियों को सोख लेते हैं और हमें शुद्ध प्राणदायिनी वायु देते हैं। पर्यावरण व भूमि संरक्षण के लिए मौजूदा समय में वृक्षारोपण जरूरी है। वृक्षारोपण कर पर्यावरण को बचाने का संकल्प हम सभी को लेने की जरूरत है। हमारा कर्तव्य है कि पर्यावरण सुधार के लिए अधिक से अधिक सख्ंया में पौधारोपण करना चाहिए। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे 17वें विश्व एग्री-टूरिज्म दिवस के अवसर पर एग्री-टूरिज्म सैंटर में वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि पौधे हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जीवन का आधार हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पौधा अवश्य लगाना चाहिए। पेड़-पौधों की कमी से निरंतर पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण बहुत जरूरी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि एग्री-टूरिज्म सेंटर को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य कृषि

अनुसंधानों व प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना और प्रकृति को स्वच्छ रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करना है। साथ ही एग्री-इको पर्यटन से लेकर शैक्षणिक मूल्यों के प्रति दूसरों को प्रेरित करना है।

इसके अलावा स्कूलों व कॉलेजों के विद्यार्थियों को जैव-विविधता के बारे में जानने का भी अवसर मिलेगा। एग्री-टूरिज्म सेंटर (कृषि पर्यटन केंद्र) को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में फूड कोर्ट व ट्री-हाउस जैसे कई अन्य आकर्षण भी जोड़े जा रहे हैं। वनस्पति विज्ञान और पादप शरीर क्रिया विज्ञान में देशी और विदेशी पौधों की प्रजातियों का संग्रह किया गया है। जैव-विविधता वाले लगभग 550 पौधों की प्रजातियां यहां देखी जा सकती हैं। यह जैव-विविधता शैक्षिक अनुसंधान का स्रोत है और आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र भी है। एग्री-टूरिज्म सेंटर के अध्यक्ष डॉ. अरविंद मलिक ने बताया कि सेंटर में प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में लोग आ रहे हैं व यह संख्या लगातार बढ़ रही है। इसके अलावा यहां फल-फूल व सब्जियों के पौधे भी बिक्री हेतु मौसम अनुसार उपलब्ध करवाए जाते हैं।

पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन एग्री-टूरिज्म सेंटर व भू-दृश्य सरंचना इकाई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। भू-दृश्य सरंचना इकाई के अध्यक्ष डॉ. पवन कुमार ने कहा कि महत्वपूर्ण अवसरों पर हमें अवश्य पौधरोपण करना चाहिए। इससे लोगों में वृक्षों के प्रति जागरुकता आएगी।

हकृवि को 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात:
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे।

उपरोक्त डिजाइनों की ये हैं मुख्य विशेषताएं:

वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली: यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की।

स्कॉलर चेयर: इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। उचित समर्थन के लिए और पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लम्बे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्ग्रोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाई और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है। जब पैनल उपयोग में न हो तो उसे वापिस अपनी स्थिति में मोड़ा जा सकता है। यह कुर्सी काम करते समय व्यक्ति के शरीर को सहायता प्रदान करता है और रीड़ की हड्डी में किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाता है।

मूवेबल मिल्किंग स्टूल: बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। इसके एक तरफ गिलास या मग रखने के लिए जगह दी गई है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कुल्हे के जोड़ो और रीड़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है। स्टूल का मुख्य लाभ व्यक्ति के लिए झुकते और बैठते समय आरामदायक सुरक्षा प्रदान करना है।

गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा: कुलपति

गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्राय: सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिचिंत इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मक्की के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवता भी बढ़ जाती है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत

प्रोटीन होती है।

उन्नत किस्मों का चयन करके अधिक पैदावार प्राप्त करें किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि किसान लोबिया की उन्नत किस्में लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। लोबिया की सी.एस. 88 किस्म, एक उत्कृष्ट किस्म है जो चारे की खेती के लिए सर्वोतम है। यह सीधी बढने वाली किस्म है जिसके पत्ते गहरे हरे रंग के तथा चौड़े होते हैं। यह किस्म विभिन्न रोगों विशेषकर पीले मौजेक विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी व कीटों से मुक्त है। इस किस्म की बिजाई सिंचित एवं कम सिंचाई वाले क्षेत्रों में गर्मी तथा खरीफ के मौसम में की जा सकती है। इसका हरा चारा लगभग 55-60 दिनों में कटाई लायक हो जाता है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 140-150 क्विंटल प्रति एकड़ है।

चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि लोबिया की काश्त के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, परन्तु रेतीली मिट्टी में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है। लोबिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए किसानों को खेत की बढिया तैयारी करनी चाहिए। इसके लिए 2-3 जुताई काफी हैं। पौधों की उचित संख्या व बढ़वार के लिए 16-20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ उचित रहता है। पंक्ति-से-पंक्ति की दूरी 30 सैंटीमीटर रखकर पोरे अथवा ड्रिल द्वारा बिजाई करें। लेकिन जब मिश्रित फसल बोई जाए तो लोबिया के बीज की एक तिहाई मात्रा ही प्रयोग करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि बिजाई के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। लोबिया के लिए सिफारिश किए गए राइजोबियम कल्चर से बीज का उपचार करके बिजाई करें। फसल की अच्छी बढ़वार के लिए 10 किलोग्राम नाइट्रोजन व 25 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ बिजाई के पहले कतारों में ड्रिल करनी चाहिए। दलहनी फसल होने के कारण इसे नाइट्रोजन उर्वरक की अधिक आवश्यकता नहीं होती। मई में बोई गई फसल को हर 15 दिन बाद सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

धान फसल में बौनेपन की समस्या से निपटने के लिए किसान उठाएं कारगर कदम: प्रो. बी.आर. काम्बोज

वर्तमान में चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस हरियाणा में कई स्थानों पर देखे गए हैं। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है। इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के विभिन्न स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों के प्रयोगशाला विश्लेषण से उक्त वायरस की उपस्थिति का पता चला है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम धान की फसल की नियमित निगरानी कर रही है और संदिग्ध नमूनों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है।

किसानों के लिए सलाह: वैज्ञानिक डॉ. विनोद

कुमार मलिक ने बताया कि अगेती नर्सरी बुआई पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए और प्रभावित चावल के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौध रोपण के लिए उपयोग करने से बचें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके लिए कीटनाशकों डिनोटफ्यूरान 20: एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रोजिन 50: डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़। (10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल नर्सरी क्षेत्र) का प्रयोग करें। सीधी बुआई वाले चावल की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि हकृवि के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिसके कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे। जिससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थी।

प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गांधी और डॉ. मंजुनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सैम्पल एकत्रित किए।

'बायोमेथनेशन एवं अपशिष्ट मूल्यांकन लैब' कृषि अवशेषों के मूल्यवर्धक उत्पाद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी: प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्याय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग में 'बायोमेथनेशन एवं अपशिष्ट मूल्यांकन प्रयोगशाला' व संशोधित गोबर गैस प्लांट का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई) की वित्तीय सहायता से पुनर्निर्मित की गई है।

प्रो. काम्बोज ने 'बायोमेथनेशन एवं अपशिष्ट मूल्यांकन प्रयोगशाला' के बारे में बताया कि यह लैब हमारे विश्वविद्यालय के पर्यावरण समृद्धि और स्वच्छता के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यह प्रयोगशाला कृषि अवशेषों के मूल्यवर्धक उत्पाद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस प्रयोगशाला में कृषि अवशेषों जैसे पराली, डंठल, छिलके तथा अन्य अपशिष्टों से मूल्यवर्धक वस्तुएं बनाई जाएंगी। जिनमें बायोगैस, बायोइथेनॉल, बायोडीजल, कम्पोस्ट, जैव सक्रिय यौगिक जैसे पॉलीफीनोल्स जो एंट्रीमाइक्रोबियल एवं एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि वाले होते हैं तथा पॉलीहाइड्रोक्सीब्यूरेट का उत्पादन सूक्ष्मजीवों के द्वारा किया जाता है। इस लैब में कृषि अपशिष्टों के विश्लेषण, बायोगैस के विश्लेषण, मेथेनोजन के विकास के लिए अनारोबिक चेंबर, जैव इंधन उत्पादन के लिए बायोरिएक्टर जैसे उन्नत प्रौद्योगिकी आधारित उपकरण हैं एवं बायोफ्यूल उत्पादन के लिए कृषि खाद्य अपशिष्ट, हरित संश्लेषित नैनोपार्टिकल्स तथा पोल्ट्री अपशिष्ट जैसे विभिन्न योजकों का उपयोग किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य अपशिष्ट पदार्थों के हानिकारक प्रभावों को पर्यावरण तथा मानव स्वास्थ्य पर कम करना है। इसके साथ ही अपशिष्ट प्रबंधन रोजगार के अवसर प्रदान करने तथा अर्थव्यवस्था में सुधार करने के अवसर भी प्रदान करता है। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक डॉ. कमला मलिक को प्रयोगशाला का प्रभारी एवं डॉ. शिखा महता को सह प्रभारी बनाया गया है।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी एवं इंधन की कमी की पूर्ति करने में गोबर गैस प्लांट की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हकृवि ने गोबर द्वारा चलने वाले जनता मॉडल के बायो गैस प्लांट को संशोधित करके ऐसा डिजाइन तैयार किया है जो ताजे गोबर से चलता है। संशोधित गोबर गैस प्लांट को लगाने से जगह व पैसे की लागत अन्य डिजाइन की अपेक्षा कम आती है। इसे घर के आंगन में भी लगाया जा सकता है। इस प्लांट को शौचालय के साथ जोडकर गैस की मात्रा व खाद की गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकती है। सलरी में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश की मात्रा गोबर की अपेक्षा अधिक होती है तथा इसका उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता बढ़ती है। इसमें नीम, आक या धतुरे के पत्ते मिलाकर डालने से खेत में कीड़े व बीमारियों का प्रकोप नहीं रहता।

'बायोमेथनेशन एवं अपशिष्ट मूल्यांकन लैब' का उद्घाटन करते कुलपति

संशोधित गोबर गैस प्लांट का उद्घाटन करते कुलपति

एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित धान थ्रेशर (मशीन) को मिला पेटेंट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है।

वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का नतीजा है विश्वविद्यालय की उपलब्धियां : प्रो. बी.आर. काम्बोज : विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा हैं। विकसित की गई इस नई तकनीक के लिए पेटेंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि इस तरह की तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयास जारी रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे।

सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन तथा हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

धान थ्रेशर की मुख्य विशेषताएं:

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रूपए है।

फीडबैक

मीडिया एडवाइज़र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004

दूरभाष : 01662-255307

ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत

(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)

वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : Dorex Offset, Hisar Mob. 98960-11117